सुधा गोयल

दिए का तेल

अत्ति और जिया को भागो ने झिंझोड़ कर जगा दिया।दस साल का अत्ति और छः साल की जिया, ललचाई आंखों से दीपावली की रोशनी और पटाखों की कान फोड़ आवाज तथा चकई और फूलझड़ी की रंग -बिरंगी रोशनी को दोनों रात गए तक देखकर सोए थे।भागो भी झोंपड़ी में उजाला कर लेती, लेकिन भागों की किस्मत की डोर जिस दिन से अलखू के साथ जुड़ी उसी दिन से दर -दर भटकना,रोटी के नाम पर भुखमरी और गंदी गालियों से जुड़ गई।

भागो को यह सब क्या अच्छा लगता था ।दोनों बच्चे ललचायी नजरों से दूर छूटते अनार देख रहे थे ।सामने हलवाई की दुकान से उठती पकवानों की महक उन्हें उतावला बना रही थी और जब अत्ति जिया स्वयं को ना रोक सके तो हाथ पकड़े बस्ती की ओर निकल गए इसी आशा में की शायद कोई दया कर एक आध मिठाई का टुकड़ा उन्हें थमा दे और इसीलिए एक मंदिर की सीढ़िया पर जाकर खड़े हो गए ।लोग अंदर से दर्शन कर बाहर आ रहे थे और प्रसाद बांट रहे थे। वे दोनों भी अपने छोटे-छोटे हाथ आगे कर देते। उन हथेलियां पर लोग लड्डू का चूरा, बताशा या बर्फी का टुकड़ा रख देते। जिया ने हाथ में रखे पेड़े के टुकड़े को मुंह में रखना चाहा तो अत्ति ने टोका -"सब्र कर जिया, इकट्ठा कर एक साथ खाएंगे।

जिया ने अत्ति का कहना मानकर हाथ में पकड़ी छोटी सी पॉलिथीन में डालना शुरू कर दिया। थोड़ी देर में प्रसाद के टुकड़ों से उनकी पॉलिथीन भर गई। दोनों भाई-बहन खुश होकर घर लौट आए और इस नीम अंधेरे में भागों को दोनों थैलियां थमा दीं -"मां प्रसाद है।"

और भागो ने प्रसाद के हिस्से कर उन दोनों को थमा दिए। वह स्नेह से उनके सिर पर हाथ फेरने लगी ।हाथ फेरते हुए झोपड़ी में रखें एक-एक समान पर उसकी नजर डोलती रही । अत्ति और जिया के फटे कपड़े, थिगड़ी से भरी अपनी लुगड़ी, कोने में लुढ़की पड़ी देशी ठर्रे की खाली बोतल और बोतल की मानिंद ही खर्राटे लेता अलखू जिसे शराब के अलावा कुछ नहीं सुहाता।

जाड़ा आने वाला है ।रुई के एक गोले की प्राप्ति की बात तो दूर तन ढकने को भी कपड़े नहीं। ठंड में नंगे पैर घूमने से फटी बिबाइयां और सख्त पैरों पर हाथ फेरते-फिरते भागो रुक गई ।इतनी कम उम्र में भी कहीं पैर इतनी सख्त होते हैं। स्कूल जाते गोल मटोल चिकनी चुपड़े गालों वाले ,जूते मोजे पहने बच्चे कितने अच्छे लगते हैं । अत्ति और जिया को स्कूल भेजने का सपना उसकी पलकों में उगा था लेकिन उतनी ही बेरहमी से उसने अपने सपने को कुचल दिया।

अलखू की मारपीट और गाली गलौज के बाद जब घर में चूल्हा न जलता तो अत्ति चोरी छुपे किसी बाग में दरख़्त पर चढ़कर फल तोड़ लाता या किसी घर से भीख मांगता। दोनों भाई-बहन खा पी कर सो जाते। धीरे-धीरे भागों स्वयं काम पर निकलने लगी। मुंह अंधेरे एक बोरी कंधे पर डालती, अत्ति और जिया को साथ ले चलती। घरों से फेंके गए कूड़े से कागज प्लास्टिक लोहे टीन के टुकड़े गत्ते के डब्बे बीन कर बोरी में डालती रहती और जिया अत्ति उसकी मदद करते।

दिन के प्रथम प्रहर में ही उसका यह काम चलता। मुश्किल से तीस चालीस रुपए का कबाड़ा इकट्ठा होता। कभी इतना भी नहीं ।कबाड़ी उनका लाया कबाड़ देखकर अंदाज से ही पैसे थमा देता लेकिन किसी दिन कबाड़ में टूटे बर्तन या शराब की खाली बोतले होती तो पैसे अच्छे मिल जाते ।लौटकर सन की रस्सी बुनती और शाम को बस्ती में घूम-घूम कर रस्सी बेचती।

जिस दिन कबाड़ बीनने न जा पाती उसे दिन अत्ति और जिया अकेले चले जाते। दस बीस रुपए लेकर ही लौटते। कबाड़ बीनने से ज्यादा चिंता उसे आज दूसरी थी। लोग दिवाली मना कर देर से सोए हैं और इतनी सुबह उठकर घर की सफाई नहीं करेंगे। कबाड़ बीनने बाद में जाएगी।

अत्ति और जिया आंख मलते हुए उठ गए । भागो ने नींद खुलवाने के लिए रात की बची प्रसादी दे दी। प्रसाद खा पानी पी दोनों तैयार हो गए। दिशा मैदान से रास्ते में ही निबट लेंगे ।भागो ने शराब की खाली बोतल अत्ति को थमा दी और जिया के गले में झोली लटका दी।

दोनों भाई बहन चल दिए। कोठियों के बाहर बने सहन में धीरे से घुस जाना और अधजले दियों से तेल बोतल में पलटना,

एक आध टुकड़ा मोमबत्ती का मिल जाता और अधजली फुलझड़ी एकाध बिना छूटा पटाखा अत्ति उठा लेता और अपनी झोली में डालकर उसी तरह बाहर निकल आता जिस तरह धीरे से अंदर गया था तेल की बोतल अपने हाथ में और से सामान जिया की झोली में। बिना छूटे काफी पटाखे सड़क पर पड़े मिल गए। दिन निकलने से पहले पूरी बोतल तेल से भर गई और जिया की झोली में काफी मोमबत्तियां और पटाखे हो गए दोनों हाथ में हाथ डाले घर की और लौट चलें।

"जिया,आज अम्मा पूरियां बनाएंगी।"

"और मैं पटाखे चलाऊंगी।"

"जिया,मैं एक मोमबत्ती रोज झोपड़ी में जलाऊंगा।"

दोनों बातें करते बड़े घरों से चुराई रोशनी की चंद नियामतें अपनी झोली में डालें खुशी-खुशी लौट पड़े ।उन्हें क्या पता कि बड़े घरों की रोशनी से झोपड़े रोशन नहीं हुआ करते ।मोमबत्ती से झोपड़ी जल जाती हैं। कभी-कभी उजाला कितना बेरहम होता है।

जिया और अत्ति घर पहुंचे। खुशी-खुशी सारा सामान मां को थमाते हुए अत्ति ने अपनी बात कह ही दी -" अम्मा पूरी बनाकर खिलाओगी न।

अम्मा मैं मोमबत्ती जलाऊंगी और पटाखे छोडूंगी ।हम आज दिवाली मनाएंगे। अम्मा तुम कबाड़ बीनने मत जाना। जिया ने अपनी छोटी-छोटी बांहें भागों के गले में डाल दीं।

भागो बच्चों को आश्वस्त करने के लिए कुछ कहने जा ही रही थी कि तभी अलखू की नींद खुल गई।" क्या मुंह अंधेरे से ही मां बच्चों ने चिल्ल पों मचा रखी है। ढंग से सोने भी नहीं देते।" और अलखू ने एक भद्दी सी गली हवा में उछाल दी। फिर करवट लेकर लेट गया, लेकिन तभी उसकी नजर भागों के हाथों पर पड़ी। वह एकदम अचकचा कर उठकर बैठ गया और भागों पर झपटते हुए बोला-

"क्या छुपा रही है इस बोतल में? दिखा ।साली मुझे से छिपाव करती है। दूंगा अभी कसके एक लात तो सारी शेखी बाहर निकल जाएगी।"

अलखू का रौद्र रूप देखकर दोनों बच्चे सहम गए ।जिया ने अपनी झोली कसकर पकड़ ली। "ये लड़की दिखा तेरी झोली में क्या है?" अलखू ने जिया के बाल पकड़े। डर से चीख कर जिया ने झोली छोड़ दी और अत्ति की बांह पकड़ कर सुबकने लगी ।अलखू ने झोली वहीं पलट दी ।सारा सामान यहां वहां बिखर गया ।अपने उल्लास को टुकड़ा -टुकड़ा होकर झोपड़ी की सीलन में विलीन होते चार मासूम आंखें देख रही थी।

"भागो सीधे-सीधे दिखा तूने क्या छुपाया है। वरना टेढ़ी उंगली करनी मुझे भी आती है। और तू मेरी उंगली का मतलब खूब समझती है।"

"नासपीटे तुझे बच्चों की खुशियां भी नहीं देखी जाती। कैसा बाप है। मुंह अंधेरे में गए बच्चे यह सामान बीनकर लाए और तूने ठोकर मार दी। कभी एक दाना अन्न का भी उनके पेट के लिए लाया है। ले देख इस बोतल में सरसों का तेल है ।बुझे दियों से उलट कर लाए हैं और खुश हो रहे हैं कि आज पूरी खाएंगे।"

"तुम सब तेल की बनी पूरियां खाओगे और मेरा जरा भी ध्यान नहीं। चार दिन हो गए दो बूंद शराब को भी तरस गया। ठेके वालों ने लात मार कर निकाल दिया।बाप की बेइज्जती हो और घर में तर माल बनाकर खाओ, लानत है तुम सब पर"- और एक ही झपट्टे में अलखू ने भागो के हाथों से तेल की बोतल छीन ली और झोपड़ी के बाहर चला गया।

भागो ने आंखों में आए आंसुओं को वहीं रोक लिया। पूरी खाने का सपना बड़े घरों से चुराकर लाए तेल में डूब चुका था। भागो उठी उसने तीन झोलियां बनाईं। एक अपने कंधे पर तथा दोनों दोनों बच्चों के कंधे पर डालीं। अब वे फिर बस्ती की ओर जा रहे थे दिवाली की त्यौहारी लेने।